685

Total Pages : 4 **Roll No. ----------**

MASL-204

नाटक एंव नाटिका

एम0ए0 संस्कृत (एम0ए0एस0एल0–12 / 16 / 17)

द्वितीय वर्ष, सत्र 2021 (Winter)

Time: 2 Hours Max. Marks: 80

नोट : यह प्रश्नपत्र अस्सी (80) अंकों का है जो दो (02) खण्डों, क तथा ख में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल करना है।

खण्ड–क

(दीर्घ उत्तरों वाले प्रश्न)

नोट : खण्ड 'क' में पाँच (05) दीर्घ उत्तरों वाले प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए बीस (20) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल दो (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

[2 x 20 = 40]

P.T.O.

Q.1. 'मृच्छकटिकम्' की वर्तमान प्रासडिगकता पर प्रकाश डालिये।

Q.2. 'मृच्छकटिकम्' का कथासार का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

Q.3. 'मृच्छकटिकम्' के अनुसार चारूद्त्त एवं वसन्तसेना के चरित्र चित्रण का वर्णन कीजिए।

Q.4. निम्नलिखित श्लोक में से किन्हीं दो श्लोकों की व्याख्या कीजिए–

(क) सुखं हि दुःखान्यनुभूय शोभते
धनान्धकारेष्विव दीपदर्शनम्।
सुखात्तु यो याति नरो दरिद्रतां
धृतः शरीरेण मृतः स जीवति।।

(ख) य आत्मबलं ज्ञात्वा भारं तुलितं वहति मनुष्यः।
तस्य स्खलनं न जायते नच कान्तारगतों विपद्यते।।

(ग) शिखा प्रदीपस्य सुवर्णापिंञ्जरा
महीतले सन्धिमुखेन निर्गता।
विभाति पर्यन्ततमः समावृता
सुवर्णरेखेव कषे निवेशिता।।

Q.5. निम्नलिखित श्लोक में से किन्हीं दो श्लोकों/गद्य की व्याख्या कीजिए–

(क) तपसा मनसा वाग्भिः पूजिताः बलिकर्मभिः।
तुष्यन्ति शमिनां नित्यं देवताः किं विचारितैः।।

(ख) दारिद्रयात् पुरूषस्य बान्धवजनो वाक्ये न सन्तिष्ठते
सुस्निग्धा विमुखी भवन्ति सुहृदः स्फारी भवन्त्यापदः।
सत्त्वं ह्रासमुपैति शीलशशिनः कान्तिः परिम्लायते
पापं कर्म च यत् परैरपि कृतं तत्तस्य सम्भाव्यते।।

(ग) अहो! नगरात् सुदूरमपक्रान्तोऽस्मि। तत् किमस्मात् प्रवहणादवतीर्य वृक्षवाटिकागहनं प्रविशामि? उताहो प्रवहणस्वामिनं पश्यामि। अथवा कृतं वृक्षवाटिकागहनेन। अभ्युपपन्नवत्सलः खलु तत्रभावनार्यः चारूदत्तः श्रूयते, तत् प्रत्यक्षीकृत्य गच्छामि।

खण्ड– ख

(लघु उत्तरों वाले प्रश्न

नोट : खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरों वाले प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए दस (10) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल चार (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

[4 x 10 = 40]

P.T.O.

Q.1. 'मृच्छकटिकम्' शब्द का अर्थ लिखिए तथा क्यों इसका नाम मृच्छकटिकम् हुआ?

Q.2. 'मृच्छकटिकम्' के द्वितीय व तृतीय अंक के कथा का सारांश लिखिए।

Q.3. 'मृच्छकटिकम्' नाटक में मैत्रेय की भूमिका का चित्रण कीजिए।

Q.4. 'मृच्छकटिकम्' में विद्यमान मुख्यरस का वर्णन कीजिए।

Q.5. 'रत्नावली' नाटिका के प्रथम अंक का कथासार का वर्णन कीजिए।

Q.6. 'रत्नावली' के रचनाकार श्रीहर्ष के कृतित्व पर प्रकाश डालिए।

Q.7. 'रत्नावली' के नाटिका के नायक का चरित्र चित्रण कीजिए।

Q.8. 'रत्नावली' के प्रमुखपात्रों का चरित्र चित्रण कीजिए।

———————————